नाम - डॉ सुजाता गुप्ता
विभाग - हिंदी
वर्ग - इन्टरमीडिएट एकादश
पत्र - II (पद्य)

शीर्षक :- 'बहुत दिनों के बाद'
कवि :- नागार्जुन

'बहुत दिनों के बाद' (नागार्जुन) कविता की व्याख्या :

यायावर प्रवृत्ति के कवि नागार्जुन एक स्थान पर अधिक देर नहीं रुक पाते थे। एक जगह से दूसरी जगह घूमते रहना उन्हें अधिक भाता था। लगातार घूमने के पश्चात् जब भी कभी अपने गाँव आते थे, तो ग्रामीण परिवेश में रम जाते थे। यहाँ की मिट्टी का स्नेह उन्हें अभिभूत कर देता था और वे इस सुख के अथाह सागर में डूबे रहते थे। ग्रामीण अंचल की खुशबू, उसमें बसनेवाले लोग, उनकी क्रियाएँ मुस्कराती हुई फसलें, किशोरियों के मधुर गीत, ताजे-टटके फूलों की गंध, चलती पगडंडियों की धूल — सभी कुछ कवि की पाँचों इन्द्रियों को अपने मनोरम दृश्यों के वशीभूत कर लेता है।

" बहुत दिनों के बाद
बहुत दिनों के बाद
अब की मैंने जी-भर भोगे
गंध-रूप-रस-शब्द-स्पर्श सब साथ-साथ
इस भू पर
— बहुत दिनों के बाद "

कविता की पहली पंक्तियों में 'आँखों' के द्वारा देखने की अनुभूति का वर्णन मिलता है। कवि गाँव आने पर खेतों में बनकर तैयार हुई लहलहाती फसलों को देखकर आनंदित होता है। खेतों में मुस्कुराती फसलों को देख कवि का मन प्रफुल्लित हो उठता है। अपनी मिट्टी के प्रति कवि का सहज आकर्षण स्वाभाविक है। गाँव के प्रति उनका

Scanned with CamScanner

प्रेम, वहाँ के हर वृक्षों से प्रकट होता है। दूसरी पंक्तियों में 'कानों' के द्वारा सुनने की अनुभूति है। धान कूटती हुई गाँव की किशोरियों की मीठी बोली, उनके गुनगुनाते गीतों से कवि आह्लादित हो उठता है। इन खुशी के गीतों को वह जी भर कर सुनना है, ताकि उनकी मीठी तान को वह स्वयं में ही समाहित कर ले। जिस प्रकार कोयल अपनी मधुर आवाज से पूरे वातावरण को प्रभावित कर देती है, उसी प्रकार गाँव में धान कूटती किशोरियाँ ग्रामीण परिवेश को गीतों के द्वारा मधुर बना देती हैं। 'गाना' गाना भी प्रसन्नता और अच्छे फसल का होना इंगित करता है। आगे की पंक्तियों में 'नाक' के द्वारा सूंघने की शक्ति का वर्णन हो रहा है। अपने गाँव में घूमते हुए कवि को तरह-तरह के पेड़-पौधे तथा उनके फूलों की ताजी खुशबू को महसूस कर रहे हैं। नगरों में पेड़-पौधों में खिले फल-फूल को देखना दुष्कर कार्य है। मगर, गाँवों में इस प्रकार के प्राकृतिक मनोरम छटावाले अद्भुत दृश्य तो बरबस ही दिख जाते हैं। मौलसिरी के पेड़ तो गाँव की शोभा बने हुए थे। सबसे अधिक आकर्षित करती है —

"अब की मैंने जी-भर सूँघे
मौलसिरी के ढेर-ढेर से ताजे-टटके फूल"

'ताजे-टटके फूल' मिलना गाँवों के लिए एक साधारण-सी बात है। मगर नगरों में ऐसे फूलों का मिलना कठिन काम है। गाँव आने पर कवि उन ताजे फूलों की खुशबू को फिर से अपने अन्तर्मन में बसा लेना चाहते हैं। ताकि अपने गाँव की याद भी सदैव उनके हृदय में इस ताजी खुशबू की भाँति सुगंधित रहे, बसी रहे।

आगे की पंक्तियों में 'स्पर्श' की अनुभूति हो रही है। कवि अपने गाँव की मिट्टी को जी भर छूता है। इस छोटे-से ग्रामीण परिवेश की पगडंडियों की धूल इसे चंदन के समान प्रतीत होत है। जिसके स्पर्श मात्र से ही शीतलता की अनुभूति होती है। कवि की

Scanned with CamScanner

अपने गाँव की धूल-से भी सहज आकर्षित था। उस मिट्टी के प्रति उसका अगाध प्रेम इन पंक्तियों में स्पर्श किया जा सकता है। अपने गाँव की कच्ची पगडंडियों की धूल से उसे चंदन के समान ठंडक महसूस होती थी। जिस मिट्टी में लोटकर उसका शरीर आज बड़ा बना, वह मिट्टी ~~आज~~ वंदनीय है। अपनी मातृभूमि से प्रेम, उसके हर कण-कण से प्रेम ही कविता का विषय है।

'स्वाद' की अनुभूति उन्हें गाँवों में विशेष प्रकार के मिलनेवाले फलों तथा उनके रसों को चखकर, पीकर मिली है। मिथिला में तालों की संख्या निर्दित है। यहाँ मखाने की खेती विश्व प्रसिद्ध है। पानी में पाये जानेवाले फल, मखाना तो विशेष रूप से इसमें अग्रणी है। गन्ने का रस, मखाना, पानी-फल — इन सारी चीजों को मूल रूप में चखना तो और भी अधिक आनंददायक है। कवि अपने गाँव में आने के बाद जीभर कर इन चीजों का आनंद लेता है। यह आनंद उसे आत्मिक रूप से तृप्त कर देता है।

अपने गाँव आकर कवि अपने पाँचों इन्द्रिय सुख (गंध-रूप-रस-शब्द-स्पर्श) सब को साथ-साथ भोगता है। शहरों में यह सुख अत्यंत ही दुर्लभ है। अपने गाँव के प्रति प्रेम और उस प्रेमाकर्षण के कारणों को कवि ने इस कविता के द्वारा बतलाया है। अपनी मिट्टी का स्वाद, जीवन को जी भरकर जीने की ललक, मातृभूमि के प्रति प्रेम ही कविता का प्रतिपाद्य है। गाँव में जिस प्रकार खुलकर हम अपना वास्तविक जीवन जीते हैं, प्रकृति का आनंद उठाते हैं, उसके विभिन्न उपादानों से तृप्त होते हैं, उसमें बंधे होते हैं, वह अन्यत्र कहीं भी दुर्लभ है।